पार्श्वनाथ विद्यापीठ स्वर्ण जयन्ति ग्रन्थ(फोल्डर नं. ९२०५१)

- सम्पादक -

डॉ. सागरमल जैन

डॉ. अशोक कुमार सिंह

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

विषयानुक्रमणिका

हिन्दी खण्ड

आचारांग (प्रथमश्रुतस्कन्ध) के प्रामाणिक संस्करणों के कतिपय पाठों की समीक्षा एवं भाषाकीय दृष्टि से उन्हें सुधारने की अनिवार्यता – डॉ. के. आर. चन्द्र ---------- १-९

इसिभासियाइं के कुछ अध्ययनों का भाषाशास्त्रीय विश्लेषण – डॉ. दीनानाथ शर्मा ---------- १०-१३

नयचक्र में उद्धृत आगम पाठों की समीक्षा – डॉ. जीतेन्द्र शाह ---------- १४-१८

महाराष्ट्री प्राकृत में मूल य वर्ण का अभाव – डॉ. सुदर्शन लाल जैन---------- १९-२४

जैनागमों और आगमिक व्याख्याओं में नारद – डॉ. साध्वी प्रमोद कुमारी ---------- २५-२६

जोइन्दुकृत अमृताशीति – सुदीप कुमार जैन ---------- २७-३०

शतपदी प्रश्नोत्तर पद्धति में प्रतिपादित जैनाचार – रूपेन्द्र कुमार पगारिया ---------- ३१-४२

पउमचरियं के हिन्दी अनुवाद में कतिपय त्रुटियाँ – पं. विश्वनाथ पाठक ---------- ४३-४९

कवि हरिराज कृत प्राकृत मलयसुंदरीचरियं – डॉ. प्रेमसुमन जैन ---------- ५०-५७

अनुयोगद्वारसूत्र और वैदिक व्याख्यान पद्धति की तुलना – कानजी भाई पटेल ---------- ५८-५९

जैन दर्शन में हेतुलक्षण – डॉ. धर्मचन्द जैन---------- ६०-६७

जैनधर्म में ईश्वरविषयक मान्यता का अनुचिन्तन – डॉ. कृपाशंकर व्यास ---------- ६८-७४

चित्र-अद्वैतवाद का जैन दृष्टि से तार्किक विश्लेषण – डॉ. लालचन्द जैन ---------- ७५-८६

जैन दर्शन में मन – डॉ. बच्छराज दूगड़ ---------- ८७-९१

लेश्या द्वारा व्यक्तित्व रूपान्तरण – डॉ. मुमुक्षु शांता जैन ---------- ९२-१०१

आचार्य कुन्दकुन्द की आत्मदृष्टि-एक चिन्तन – हुकुचंद संगवे---------- १०२-१०७

गीता, उसका शांकरभाष्य और जैन दर्शन – डॉ. रमेशचन्द जैन ---------- १०८-११६

जैन एवं काण्टीय दर्शनों की समन्वयवादी शैली – डॉ. वंशिष्ठ नारायण सिन्हा ---------- ११७-१२४

जैनधर्म और इस्लाम में अहिंसा-तुलनात्मक दृष्टि डॉ. निजामुद्दीन----------१२५-१३१

जैन शिक्षा दर्शन में गुरु की अर्हताएँ – डॉ. विजय कुमार ---------- १३२-१३८

तप – प्रा. डॉ. एच. यू. पण्ड्या ---------- १३९-१४९

णायकुमारचरिउ के दार्शनिक मतों की समीक्षा – जिनेन्द्र कुमार जैन ---------- १५०-१५६

योग का अधिकारी-हरिभद्रीय योग के सन्दर्भ में – कुमारी अरुणा आनन्द ---------- १५७-१६४

आख्यानकमणिकोश के २४वें अधिकार का मूल्यांकन – अनिल कुमार महेता ---------- १६५-१७१

जैन-जैनेतर दर्शनों में अहिंसा ---------- १७२-१७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाधिमरण जीवन से भागना नहीं – डॉ. रज्जनकुमार ---------- १७५-१८०
जैन शास्त्रों में आहार-विज्ञान – प्रो. नन्दलाल जैन ---------- १८१-१८४
श्रमण-महावीर तीर्थ का प्रमुख स्तम्भ – महोपाध्याय विनयसागर ---------- १९५-२०२
जैन पुराणकालीन भारत में कृषि – डॉ. देवी प्रसाद मिश्र ---------- २०३-२०६
वादिराजसूरि के जीवनवृत्त का पुनर्निरीक्षण – डॉ. अजय कुमार जैन ---------- २०७-२१३
साहित्यिक उन्नयन में भट्टारकों का अवदान – डॉ. पी. सी. जैन ---------- २१४-२१८
कविवर बनारसीदास और जीवनमूल्य – डॉ. नरेन्द्र भानावत ---------- २१९-२२५
जम्बूद्वीप और आधुनिक भौगोलिक मान्यताओं का तुलनात्मक विवेचन – डॉ. हरीन्द्रभूषण जैन ---------- २२६-२३७
आयुर्वेद साहित्य के जैन मनीषी – डॉ. हरीश्चन्द्र जैन ---------- २३८-२४४
मारवाड़ चित्रशैली एवं जैन विज्ञप्ति पत्र – डॉ. मधु अग्रवाल ---------- २४५-२५०
एलोरा की जैन सम्पदा – डॉ. आनन्द प्रकाश श्रीवास्तव ---------- २५१-२५२

English Section

A Critical Review of the Old Arya Metre Restored in the Text of Itthiparinna – Dr. K. R. Chandra ---------- 1-6
Positive Contents of Jainism – Johari Mal Parekh ---------- 7-21
Concept of Liberation and Its Prerequisites (According to Pancasutrakam of Critanacarya) – Dr. S. K. Bharadwaj ----------22-31
The Idea of Impermanence – Prof. Madhao S. Ranadive----------32-36
Jaina Asceticism – An Appraisal – Dr. Yugal Kishore Mishra----------37-42
Some Remarks on the Analysis of the sensuous cognition (Mati-jnana) Process – Piotr Balcerowicz ----------43-46
Colour-An Innate Property of the Matter – Dr. Anilk Kumar Jain----------47-51
Dhruvarasi Takanika in Jaina Canons – Dr. L. C. Jain----------52-57
Ancient Indian andSouth-east Asia as known from Jaina Sources----------58-61
Historical Significance of early Jaina Kadamba Inscriptions ----------62-67
Wall Paintings as Depicted in the Patodi Jaina Temple, Jaipur – Rita Pratap ---------68-74
Chaitya Paripati and Ahmedabad of Early Seventeenth Century – Prof. R. N. Maheta ----------75-77

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org